प्राक्कथन

मेरा प्रधान लक्ष्य यही था कि दीप्ति जी के कहानीसंग्रहों में चित्रित परिवार तथा नारी समस्या पर कुछ लिखूँ किंतु कहानियों को दूसरी बार फिरसे सूक्ष्म दृष्टि से पढ़ने के बाद मुझे इस बात का एहसास हुआ कि दीप्ति जी ने न सिर्फ परिवार तथा नारी समस्या पर प्रकाश डाला है तो इसके साथ साथ दांपत्य जीवन से संबंधित एवं उससे जुड़ी अनेकानेक स्थितियों को भी उन्होंने लिया है । जहाँ तक मुझे ज्ञात है उनकी कहानियों में चित्रित दांपत्य जीवन को लेकर कहीं भी शोध कार्य नहीं हुआ है । दांपत्य जीवन में पति–पत्नी के संबंधों में आपसी समझदारी, विश्वास, सम्मान, निष्ठा, सेवा भाव, प्रेम की भावना दृढ़ हो जाती है । इस नाजुक डोर में बंधे पति–पत्नी जीवनभर एक–दूसरे के सुख, दुख में साथ निभाने की कसमें खाते हैं । किंतु आगे चलकर यदि पति–पत्नी में किसी भी बात को लेकर असामंजस्य, अविश्वास, अहंकार, रूचि–वैषम्य या तीसरे व्यक्ति का उनके दांपत्य जीवन में प्रवेश हुआ तो ऐसी स्थिति में उनके दांपत्य जीवन में तनाव एवं विघटन की स्थिति निर्माण होने की अधिक संभावना होती हैं । इसी तरह के तनावों के कारण अहंकार, यौन–असंतुष्टि, व्यसनाधीनता, विवाहोत्तर प्रेम संबंधों की समस्याएँ निर्माण हो जाती है । जिसके कारणवश दांपत्य जीवन कटुता से भर जाता है । ऐसी स्थिति में दंपत्तियों को धैर्य, समझदारी, स्नेह तथा विश्वास से काम लेना चाहिए । पति–पत्नी दोनों मिलकर यदि आपसी मतभेद दूर कर दें तो उनके दांपत्य जीवन में फिर से प्रेम की वर्षा बरस सकती हैं। उपर्युक्त सभी बातों को मैंने दीप्ति जी की कहानीयों में प्रखरता से देखा है ।

कहानीकार का दांपत्य जीवन संबंधी दृष्टिकोण यथार्थ है । उनकी कहानियों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के पश्चात यह विचार मन में आता है कि शायद उन्होंने अपने भोगे हुए दांपत्य जीवन को कलम के माध्यम से कागज पर उतारा है । दीप्ति का मूल स्वर कवि का था इसी कारण उनकी कहानियों में भावनात्मक तथा मन के तारों को छेड़ने की असीम क्षमता है । उन्हीं बातों से प्रभावित होकर मैंने दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों को अपने लघु शोध-प्रबंध का विषय बनाया ।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में चित्रित दांपत्य जीवन पर अभी तक स्वतंत्र रूप से शोध–कार्य नहीं हुआ है । अत: प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में चित्रित दांपत्य जीवन"

इस अभाव की पूर्ति का एक प्रयास है । प्रस्तुत लघु – शोध प्रबंध का विस्तार से अध्ययन करते समय सुविधा की दृष्टि से इसे चार अध्यायों में विभाजित किया है ।

प्रथम अध्याय ''दीप्ति खंडेलवाल का रचना संसार'' है । इस अध्याय के अंतर्गत दीप्ति खंडेलवाल का व्यक्ति परिचय, दीप्ति का रचना संसार, उपन्यास एवं कहानी संग्रहों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है । इस अध्याय में लघु – शोध प्रबंध के विषय से संबंधित 'कड़वे सच', 'वह तीसरा', 'दो पल की छांह' एवं 'औरत और नाते' कहानी संग्रहों में दांपत्य जीवन से संबंधित कहानियों का परिचयात्मक अध्ययन करते हुए उनके प्रतिपाद्य एवं लेखन शैली पर भी प्रकाश डाला है ।

द्वितीय अध्याय में दांपत्य जीवन के सैद्धांतिक पक्ष को भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया है । इस अध्याय के अंतर्गत विवाह की परिभाषाएँ, स्वरूप, विवाह के प्रकार (संक्षितप्त रूप में), दांपत्य जीवन की परिभाषाएँ, अर्थ–विस्तार, जीवन शब्द का अर्थ–विस्तार, परिभाषाओं का विवेचन करते हुए दांपत्य जीवन के भारतीय स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है । प्रस्तुत अध्याय के अंत में दांपत्य जीवन में आए परिवर्तन के प्रति विचार व्यक्ति किए हैं ।

तृतीय अध्याय ''दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में चित्रित दांपत्य जीवन '' है । इसमें दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में चित्रित सफल दांपत्य जीवन तथा असफल दांपत्य जीवन पर प्रभाव डालनेवाले कारणों की विस्तृत चर्चा की गयी है । सफल दांपत्य जीवन के लिए आवश्यक तत्त्वों के अंतर्गत पति–पत्नी के मध्य आपसी विश्वास, समझदारी, प्रेम, निष्ठा, सेवा–भाव, अटूट स्नेह, दांपत्य जीवन में शारीरिक एवं मानसिक एकरूपता, आत्मसमर्पण, साहचर्य की भावना, सम्मान, आर्थिक संपन्नता आदि घटकों पर विचार किया गया है । तत् पश्चात दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में असफल दांपत्य जीवन पति–पत्नी के दांपत्य संबंधों पर किस तरह प्रभाव डालती है इसी के संदर्भ में चर्चा की है । दांपत्य जीवन में संयुक्त परिवार में पति–पत्नी का घुटनपूर्ण दांपत्य जीवन, पति–पत्नी में समझदारी का अभाव, व्यक्ति – स्वातंत्र्य की उपेक्षा, वैचारिक असमानता, रूचि– वैषम्य, पति की व्यसनाधीनता, तनाव की स्थिति, अहंभाव, यौन असंतुष्टि, पति या पत्नी की रूग्णता, आर्थिक संपन्नता की चाह, दांपत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति का प्रवेश आदि कारणों के कारणवश दांपत्य जीवन पर होने वाले परिणामों की चर्चा की है ।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक ''दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में चित्रित दांपत्य जीवन की समस्याएँ '' है । प्रस्तुत अध्याय में दीप्ति की कहानियों में चित्रित दांपत्य जीवन की समस्याओं को विश्लेषित किया है । समस्या शब्द का अर्थ–विस्तार, परिभाषा, कहानियों में चित्रित समस्याओं का चित्रण किया है । दांपत्य जीवन को विघटित करनेवाली समस्याओं जैसे अनमेल विवाह, प्रेम विवाह, आर्थिक समस्याएँ, अहंकार की समस्या, पति की व्यसनाधीनता तथा पत्नी पर अन्याय–अत्याचार की समस्या, भूख की समस्या, विवाहेत्तर प्रेम संबंधों की समस्या, यौन–असंतुष्टि की समस्या, घुटन और अकेलेपन की समस्या, परंपरागत रूढ़ि एवं संस्कारों की समस्याओं के विषय में विवेचन किया है । दीप्ति खंडेलवाल ने कहीं कहीं पर संकेत रूप में दांपत्य जीवन की समस्याओं को सुलझाने के उपाय बताए हैं ।

अंत में, उपसंहार में शीर्षक के अंतर्गत सभी अध्यायों के निष्कर्ष तथा अध्ययन से प्राप्त उपलब्धियों को प्रस्तुत किया है ।

प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है ।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला, उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपन कर्त्तव्य समझती हूँ ।

यह लघु शोध-प्रबंध आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है । आपका मिला हुआ आत्मीय और मौलिक मार्गदर्शन अविस्मरणीय है । अत: उनके प्रति मैं बहुत ऋणी हूँ । आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा परम कर्त्तव्य है । आपके इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए संभव नहीं है ।

साथ-ही-साथ श्रद्धेय डॉ. सौ. माधवी जाधव, प्रा. शिवाजीराव जाधव, डॉ. सौ. छायादेवी घोरपडे के आत्मीय सहयोग एवं योग्य निर्देशन से ही मेरा यह शोधकार्य संपन्न हुआ । अत: उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ ।

बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल एवं कर्मचारी, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल एवं सभी कर्मचारियों की भी मैं आभारी हूँ तथा हिंदी विभाग के श्री अनिल साळोखे और श्री. रमेश कांबळे इनकी मैं आभारी हूँ ।

इन विद्वानों के साथ-साथ मेरे पूज्य माता-पिताजी, भाई-बहन तथा मेरे परिवार के कृपाशीर्वाद के फल स्वरूप मैं अपनी मंझिल पा रही हूँ । उनके ऋण का बोझ हमेशा मेरे सर पर रहेगा ।

परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप में जिन हितचिंतकों का मुझे हमेशा सहयोग मिलता रहा, उन सभी की मैं एहसानमंद हूँ ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करने का कार्य ओंकार ग्राफिक्स ने किया । अत: उनकी भी मैं आभारी हूँ ।

Jkatkar

स्थान : कोल्हापुर । (कु. उर्मिला रंगराव काटकर)

तिथि : 30 जून, 2003 शोध-छात्रा